

15/07/2020

जलवायु

भारत के विश्व जलवायु पर प्रथम सर्वे

- (A) परिचय
 (B) मान्यता
 (C) आधार
 (D) सीमा / सीमा / आक्षेप

(A) परिचय:-

विश्व की जलवायु के वर्गीकरण के दृष्टिकोण से अनेक वैज्ञानिकों ने अपना प्रयास किया है जिनमें क्रमशः दिवार्डी, लोपेन और अर्नस्टेड के प्रयास उल्लेख किये हैं। अमेरिकी विद्वान E. N. Thornthwaite ने अपने सिद्धांत से तीन चरणों में रखा है प्रथम चरण का प्रकाशन 1931 ई में और द्वितीय 1933 में प्रकाशन, 1948 में तथा तृतीय चरण का प्रकाशन 1955 में किया। इनके सिद्धांत में मौसम के दो तत्वों क्रमशः वर्ष एवं तापमान की विशेष संतुष्टता भी गई है। इन दोनों तत्वों के उस माप का उल्लेख किया गया है जो समस्त जीवधारियों को प्रभावित करते हैं।

यही कारण है कि इनका यह सिद्धांत विश्व के लिए सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है।

⑧ मान्यताएँ

- (i) थॉमस हब्स की यह स्पष्ट मान्यता है कि विश्व की स्थिति सभी देशों की जनकारी सभी जीवधारियों की है।
- (ii) विश्व के सभी देशों में मौसम और जलवायु की स्थिति में परिवर्तन केवल ऋतुओं के अनुसार होते हैं।
- (iii) वर्षा और तापमान की प्रभाविता का ज्ञान विश्व के सभी देशों की है।

⑨ आधार :-

थॉमस हब्स ने अपने कृषिकार्य के लिए तीन आधारों की जगजागी की है -

- (i) वर्षा की प्रभाविता
- (ii) तापीय इलाका
- (iii) मौसम का सांख्यिक परिवर्तन

(i) वर्षा की प्रभाविता :-

थॉमस हब्स के अनुसार वर्षा के केवल उस मात्रा का आकलन आवश्यक है जो जीवधारियों को प्रभावित करता है। इसके लिए

भॉर्नश्वैर ने एक संश्लिष्ट मापक का प्रयोग किया है जिसे P/E Index कहते हैं इसकी जात करने के लिए 12 महीनों की कुल वर्षों को 12 महीनों के कुल वाष्पीकरण से भागा दिया जाता है जिससे वाष्पीकरण का सही आंकड़ा उपलब्ध ले जाता है इस आकार पर भॉर्नश्वैर ने चेंसर को पांच वर्गों में विभक्त किया है जिसकी विवरण निम्नवत् है -

क्रम	आप्रती का विभाजन	वर्णनाति	वाष्पीकरण और P/E Index
A	अधिकतर	सदावहार	320 शेर्क से अधिक
B	कम आर्द्रि	वन	160 - 318 शेर्क
C	अल्प आर्द्रि	धासु संच	80 - 157 शेर्क
D	आर्द्रि शुद्ध	हैपी वर्णनाति	40 - 78 शेर्क
E	शुद्ध	मंलस्य वर्णनाति	40 शेर्क से कम

उपरोक्त वासिका के साथ-साथ भॉर्नश्वैर ने अंग्रेजी के पांच लघु भासरो का उपयोग किया है जो वाष्पीकरण की विशेष परिस्थितियों को बताने का काम है -

1. A = सासु भर अधिक वर्ष
2. B = ग्रीष्म ऋतु में कम वर्ष
3. C = शीत ऋतु में कम वर्ष
4. D = वसंत ऋतु में कम वर्ष (मान्य अर्धव)
5. E = वर्ष भर कम वर्ष

(ii) तापीय दक्षता :-

थर्मोस्टैट के अनुसार तापमान के केवल उच्च भाग का आकलन आवश्यक है जिसका सीधा प्रभाव जीवधारियों पर पड़ता है जिसके लिए थर्मोस्टैट में एक संश्लिप्त धुर की सहायता की है जो निम्नवत् है -

$$\text{सुर} = T/E = \frac{3-32}{4}$$

T = औसत तापमान

उपरोक्त धुर की सहायता से विश्व की उच्चोत्तम धुरों के बीच की कमी को भी विगठन किया जा सकता है -

क्रम	तापीय प्रवृत्ति	T/E का धुर
A'	उच्च शरदियों के	320 से अधिक
B'	मध्य तापीय	180 - 218
C'	निम्न तापीय	80 - 157
D'	टेंगा	40 - 78
E'	डूँडा	3-37
F'	दिनाच्छादित	0 से कम

(iii) मौसम का सांक्रिय परिवर्तन :-

थर्मोस्टैट में मौसम के तत्वों को विच्छेद कर वर्षा को अत्यंत परिवर्तनकारी माना है क्योंकि कुछ भागों में वर्षा ग्रीष्म ऋतु में होती है साथ-ही साथ कहीं पर शीत ऋतु में होती है। विश्व में बहुत धारे स्थान ऐसे की हैं जिनकी स्थिति महासागरीय है जहाँ पर साखों 100 वर्षा संपन्न होती है। इन सब को कमाने के लिए थर्मोस्टैट में कुछ असरों का उपयोग किया है जो निम्नवत् है -

① भार्नेस्वैट का कजीकरण

भार्नेस्वैट ने उपरोक्त विश्व को तीन चरणों में विभक्त किया है -

प्रथम चरण - 66 क्री.पू.

द्वितीय चरण - 26 क्री.पू.

तृतीय चरण - 120 क्री.पू.

उपरोक्त कजीकरण अर्थात् वैज्ञानिक क्षेत्रों के कारण जटिल हो जा रहा है अतः विश्व के व्यापक मानवीय विशेषताओं तथा उनमें क्षेत्रों का वैश्वीय परिवर्तनों को भी बनाने के लिए अर्थात् आवश्यक है।

② समीक्षा / सीमा / आलोचना

(i) भार्नेस्वैट की मान्यताएँ सभी क्षेत्रों के उपर सही नहीं उतर पाती हैं।

(ii) भार्नेस्वैट ने अपने भाषाओं में आंतरिक विशेषताओं जैसे ब्राह्मण की प्रकृति, मिट्टी और मरुस्थल को इत्यादि को प्रयोग नहीं किया।

(iii) कालपीकरण की कल्पना के लिए जिस सुर या प्रयोग किया गया है वह या तो सभी स्थानों पर सही नहीं बैठता या कालपीकरण की आंतरिक विशेषताओं को स्पष्ट करने में असमर्थ होता है।

(iv) भार्नेस्वैट ने जिन सुरों का प्रयोग किया है उनके लिए आलोचना उपयोगिता तथा केंद्र का मान आवश्यक है।

उपरोक्त समीक्षाओं के कारण भार्नेस्वैट की जनक कजीकरण और व्यापक मान्यता प्राप्त है।

विश्व का मानचित्र